अरब सागर से प्रारम्भ होती है और मध्य प्रदेश के मैकल पर्वत स्थित नर्मदा उद्गम अमरकंटक से होकर वापस नदी के विपरीत किनारे से पुनः भरूच पर सम्पन्न होती है।

नर्मदा के किनारे सैकड़ों तीर्थस्थल और मंदिर तो हैं ही साथ ही अनेक स्थानों पर इसका सौन्दर्य देखते ही बनता है। असंख्य जड़ी-बूटियों और वृक्षों के बीच से बहती हुई नर्मदा को मध्य प्रदेश की जीवन रेखा भी कहा जाता है। सैकड़ों छोटी-मोटी नदियों को अपने में समेटती हुई यह नदी कभी इठलाती हुई चलती है, कभी शांत बहती है तो कभी सहस्त्र धाराओं में विभाजित हो जाती है। मध्य प्रदेश के जबलपुर शहर के पास संगमरमरी दूधिया चट्टानों को चीर कर इसको बहता देख दर्शक को अलौकिक सुख की प्राप्ति होती है। नर्मदा के निर्मल जल में स्नान से जो सुख प्राप्त होता है वह अवर्णनीय है। यह अपने तट पर आए आगंतुकों को आराम देती है इसी से इसका नाम 'नर्मदा' पड़ा है और चुलबुली-शरारती भी है और इसी कारण इसे 'रेवा' भी कहा गया है। स्कंद पुराण में इस नदी का वर्णन रेवा खंड के अंतर्गत किया गया है। कालिदास के 'मेघदूतम' में नर्मदा को रेवा का संबोधन मिला है, जिसका अर्थ है पहाड़ी चट्टानों से कूदने वाली।

पवित्र नदी नर्मदा के तट पर अनेक तीर्थ हैं, जहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। इनमें

नर्मदा सबसे महत्वपूर्ण पवित्र नदियों में से एक है और इसमें भी अपार आस्था समाई हुई है। पवित्रता में इसका स्थान गंगा के तुरन्त बाद है। कहा तो यह जाता है कि गंगा में स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है वह नर्मदा के दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है।

कपिलधारा, शुक्लतीर्थ, मांधाता, भेड़ाघाट, बरमान, शूलपाणि, महेश्वर, भड़ौंच उल्लेखनीय हैं। विशेष रूप से ओंमकारेश्वर शहर जो बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है नर्मदा नदी के मार्ग में आने वाले महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक है। नर्मदा नाम भगवान शिव के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। पुराणों में नर्मदा को शंकर जी की पुत्री कहा गया है, इसके प्रत्येक कंकर को शंकर माना जाता है। नर्मदा में पाए जाने वाले स्वाभाविक रूप से गठित चिकने पत्थर, जिन्हें बनास कहा जाता है तथा जो एक तरह का क्वार्ट्ज होता है, उन्हें शिवलिंगों के रूप में जाना जाता है। दुर्लभ और अद्वितीय चिह्नों से युक्त शिवलिंगों को बहुत ही शुभ माना जाता है। राजराजा चोल द्वारा तंजावुर, तमिलनाडु में निर्मित बृहदीश्वर मंदिर में स्थित शिवलिंग सबसे बड़े बाना शिवलिंगों में से एक है। ऐसा भी माना जाता है कि आदि-शंकराचार्य ने नर्मदा नदी के तट पर ही अपने गुरु गोविन्द भागवतपद से मुलाकात की थी।

सारांश

इसमें कोई दो मत नहीं है कि मध्य भारत की जीवन रेखा नर्मदा की अविरल धारा न केवल मध्य प्रदेश अपितु गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान के भी करोड़ों प्यासों की प्यास बुझाती है। जन-मानस ने इसे 'मइया' का गौरव दिया है। 'देवी' मानकर पूजा है। अपनी हजारों मन्नतें पूरी की हैं। नर्मदा ने भी अनादि काल से अनगिनत खेतों को सींचा है। अनेक परियोजनाओं के माध्यम से हमें बिजली की आपूर्ति भी करती है। आस्था के समुद्र में गोते लगाकर जिसने जो मांगा है उसे निराश नहीं किया है। पर आइए हम भी जरा सोचें कि हमनें अपनी 'मां' के लिए क्या किया है क्या हमारा कोई कर्तव्य नहीं है अपनी नर्मदा 'मइया' के प्रति मात्र पवित्रता करने से या स्तुतिगान से काम नहीं चलता। सेवा भाव से इसकी परिक्रमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हम सबको जागरूक रहकर इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास करना होगा ताकि आने वाली पीढ़ियां भी लाभान्वित हो सकें।

संपर्क करें:
मनीष कुमार नेमा
वैज्ञानिक 'बी'
रा.ज.सं., रूड़की

जल काव्य

पानी जीवन दानी है

जीवन नीर-समीर है, जल अमूल्य आधार है।
समझें तो गम्भीर है। व्यर्थ न इसे बहाना है,
नीर स्वच्छ, पानी मैला, जग जल हेतु अधीर है।
सारे जग में है फैला। जल दोहन कम करना है,
धरती माँ आमाशय, भू को जल से भरना है ।
शुद्ध नीर भरकर थैला। नीर नष्ट तो फटे धरा,
पानी पावन नीर है, जीवन नहीं ठहरना है।
कण-कण हर क्षण पानी। हालि नीर ही पीर है,
जल की मधुर कहानी है। जल, पय, पानी, नीर है।
खींचातानी नीर बिना, कबका नीर शरीर है,
पानी जीवन-दानी है। रण होगा क्षति पानी से।
जल अमृत है क्षीर है, नीर स्वयं रणधीर है,
पानी हमें बचाना है। नीर बाँधता धीर है।
खूब काम में लाना है,

जल जीवन है

जल जीवन है, संजीवन है, धरती पीती पानी।
जल है अमृतधारा। हमें पिलाती, फसल उगाती,
धरती माँ के भरे पेट में, बनती एक कहानी।
मृदु जल का फव्वारा। हम बेटे हैं, माँ है धरती,
बूँद-बूँद पानी की होती, क्या है कभी विचारा?
है अनमोल हमेशा। नीर पिलाएँ, भोजन भी दें,
जल होगा तो जीवन होगा, खाती खाद बेचारी।
जल बिन जीवन कैसा? शुद्ध वायु की साँसें लेकिन,
सूखे नहीं धरा का पानी, धरती की लाचारी।
है कर्तव्य हमारा। 'हरियाली से भरें धरा को'
यहाँ-वहाँ से जहाँ-तहाँ से, याद रखें यह नारा।

संपर्क करें :
डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष', 'वाग्धाम'-11 डी/ई-36 डी, बालाजी नगर, टुण्डला रोड, आगरा- 282006 (उत्तर प्रदेश)
[मो. : 09411839862, 09528202915]